❋ 30 जुलाई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

❋ ज्ञान-

1] यह तो समझते हैं स्वर्ग था, जो पास्ट हो गया। चित्र भी हैं परन्तु यह ख्यालात तुम बच्चों को अभी आते हैं। तुम जानते हो यह चक्र हर 5 हजार वर्ष के बाद रिपीट होता है। शास्त्रों में कोई यह लिखा है कि सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी डिनायस्टी 2500 वर्ष चलीं।

2] कुछ भी आफतें आती हैं तो मनुष्य भक्ति में लग जाते हैं, भगवान को राज़ी करने के लिए। ऐसे कोई भगवान राज़ी होता नहीं है। यह तो ड्रामा में नूँध है। भक्ति से कभी भगवान् राजी नहीं होता। तुम बच्चे जानते हो आधाकल्प भक्ति चलती है, खुद ही दु:ख उठाते रहते हैं। भक्ति करते-करते सब पैसे खलास कर देते हैं।

3] यह बड़ी-बड़ी बिल्डिंग्स् आदि सब खत्म हो जायेंगी इसलिए बाप कहते हैं– मीठे-मीठे बच्चे, यह जो कुछ देखते हो, ऐसे समझो यह है नहीं। यह तो सब खलास हो जाना है।

4] वहाँ तो बच्चे भी योगबल से होते हैं। विकार की बात ही वहाँ नहीं होती। योगबल से तुम सारे विश्व को पावन बनाते हो तो बाकी क्या बड़ी बात है। इन बातों को भी वही समझेंगे जो अपने घराने के होंगे।

5] बुद्धि में रहता है हमारा राज्य था तो यह बाम्बे-कराची आदि तो थे नहीं। भारत कितना छोटा जाकर रहेगा, सो भी मीठे पानी पर। वहाँ कुएं आदि की दरकार नहीं। पानी बड़ा स्वच्छ पीने का रहता है। नदियों पर तो खेलपाल करते हैं। गन्दगी की कोई बात नहीं।

6] एक कोई बड़े को तुम ऐसे समझाओ तो सब सुनते रहेंगे। योग में रह बताओ तो सबको टाइम आदि ही भूल जाए। कोई कुछ कह न सके। 15-20 मिनट के बदले घण्टा भी सुनते रहें। परन्तु वह ताकत चाहिए। देह-अभिमान नहीं होना चाहिए। यहाँ तो सर्विस ही सर्विस करनी है, तब ही कल्याण होगा। राजा बनना है तो प्रजा कहाँ बनाई है। ऐसे ही बाप थोड़ेही माथे पर पाग रख देंगे। प्रजा डबल सिरताज बनती है क्या? तुम्हारी एम ऑब्जेक्ट ही है डबल सिरताज बनने की। बाप तो बच्चों को हुल्लास दिलाते हैं। *(यह पॉइन्ट ज्ञान, योग और धारणा के लिए कॉमन है)*

7] वर्तमान समय माया रीयल समझ को, महसूसता की शक्ति को गायब कर रांग को राइट अनुभव कराती है। जैसे कोई जादूमंत्र करते हैं तो परवश हो जाते हैं, ऐसे रॉयल माया रीयल को समझने नहीं देती है। इसलिए बापदादा अटेन्शन को डबल अन्डरलाइन करा रहे हैं।

❋ योग-

1] तुम बच्चे योगबल से अपना श्रृंगार करो, इस योगबल से ही सारा विश्व पावन बनेगा।

2] जन्म-जन्मान्तर के पाप सिर पर हैं, वह योगबल से ही कट सकते हैं। बाकी इस जन्म में क्या-क्या किया है वह तो तुम समझ सकते हो ना। पाप काटने के लिए योग आदि सिखाया जाता है। बाकी इस जन्म की तो कोई बात नहीं। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने की युक्ति बाप बैठ बतलाते हैं, बाकी कृपा आदि तो जाकर साधुओं से मांगो।

3] जो सहजयोगी हैं उनको देखकर दूसरों का भी योग सहज लग जाता है।

...2

✺ 30 जुलाई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

[2]

✺ धारणा-

1] तुमको अब वानप्रस्थ में जाना है इसलिए इस शरीर का श्रृंगार करने की जरूरत नहीं। यह तो वर्थ नाट पेनी है, इससे ममत्व निकाल दो। विनाश के पहले बाप समान रहमदिल बन अपना और दूसरों का श्रृंगार करो। अन्धों की लाठी बनो।

2] हम खुशी का खजाना यहाँ से भरकर जाते हैहं। तो इस कमाई करने में, झोली भरने में अच्छी रीति लग जाना चाहिए। टाइम वेस्ट नहीं करना चाहिए। बस, अभी तो हमको औरों को सर्विस करनी है, झोली भरनी है। बाप सिखलाते हैं, रहमदिल कैसे बनो? अंधों की लाठी बनो।

3] भगवानुवाच– तुम इस अन्तिम जन्म में पवित्र बनेंगे तो पवित्र दुनिया के मालिक बनेंगे, 21 जन्म के लिए। सिर्फ यह एक जन्म मेरी श्रीमत पर चलो। रक्षाबन्धन भी इसकी निशानी है। तो क्यों नहीं हम पवित्र रह सकेंगे। बेहद का बाप गैरन्टी करते हैं।

4] केयरफुल रहो जो माया की छाया से सेफ मायाप्रूफ बन जाओ। विशेष मन-बुद्धि को बाप की छत्रछाया के सहारे में ले जाओ।

✺ सेवा-

1] मीठे बच्चे– तुम्हें डबल सिरताज राजा बनना है तो खूब सर्विस करो, प्रजा बनाओ, संगम पर तुम्हें सर्विस ही करनी है, इसमें ही कल्याण है।

2] बाप कहते हैं– बच्चे, अब यह पुरानी पतित दुनिया पूरी होनीहै। नई पावन दुनिया स्थापन हो रही है। नई दुनिया में बहुत थोडे मनुष्य थे। नई दुनिया है सतयुग जिसको सुखधाम कहते हैं। यह है दु:खधाम, इसका अन्त जरूर आना है। फिर सुखधाम की हिस्ट्री रिपीट होनी है। सबको यह समझाना है।

3] मनुष्य बिचारे न बाप को जानते हैं, न रचना को जानते हैं कि शुरू से लेकर यह रचना कैसी रची। देवताओं का राज्य कब था, जिनको पूजते हैं, कुछ भी पता नहीं। समझते हैं लाखों वर्ष सूर्यवंशी राजधानी चली, फिर चन्द्रवंशी लाखों वर्ष चले, इसको कहा जाता है अज्ञान। अभी तुम बच्चों को बाप ने समझाया है, तुम फिर रिपीट करते हो। बाप भी रिपीट करते हैं ना। **ऐसे समझाओ, पैगाम दो,** नहीं तो राजधानी कैसे स्थापन होगी।

4] यह सारा रावण राज्य एक आइलैण्ड है। अनगिनत मनुष्य हैं। तुम सब अपना राज्य स्थापन कर रहे हो। **तो सर्विस में बिज़ी रहना चाहिए।**

5] नाम ही है स्वर्ग, अमरलोक। नाम सुनकर ही दिल होती है जल्दी-जल्दी बाप से पूरा पढ़कर वर्सा ले लेवें। **पढ़कर और फिर पढ़ावें। सबको पैगाम दें।**